



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 257]

नई दिल्ली, मंगलवार, मई 29, 1984/ज्यैष्ठ 8, 1906

No. 257]

NEW DELHI, TUESDAY, MAY 29, 1984/JYAISTHA 8, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

उद्योग मंत्रालय

(औद्योगिक विकास विभाग)

आदेश

नई दिल्ली, 29 मई, 1984

का० आ० 408 (अ)/18च क/आई डी आर ए/84 :—केन्द्रीय सरकार ने भारत सरकार के उद्योग और नागरिक पुनर्गठन मंत्रालय (औद्योगिक विकास विभाग) के आदेश सं० का० आ० 422 (अ), तारीख 5 अगस्त, 1975 द्वारा (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त आदेश कहा गया है), उसमें विनिर्दिष्ट व्यक्तियों के निकाय को सैम्स एंजिल इंडिया मशीन एण्ड टूल्स लिमिटेड, कलकत्ता नामक औद्योगिक उपक्रम का (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त औद्योगिक उपक्रम कहा गया है) प्रबंध 5 अगस्त, 1975 से 5 वर्ष की अवधि के लिए ग्रहण करने के लिए, प्राधिकृत किया था;

और, केन्द्रीय सरकार के उद्योग मंत्रालय (औद्योगिक विकास विभाग) ने अपने आदेश सं० का० आ० 292 (अ), तारीख 16 मई, 1979 द्वारा सचिव, वन्द और रण्य उद्योग विभाग, पश्चिमी बंगाल सरकार को जिसे अब सचिव, औद्योगिक पुनर्निर्माण विभाग, पश्चिमी बंगाल सरकार कहा जाता है (जिसे इसमें इसके पश्चात् प्राधिकृत व्यक्ति कहा गया है) पूर्वोक्त व्यक्तियों के निकाय से उक्त औद्योगिक उपक्रम का प्रबंध 5 अगस्त,

1975 से पांच वर्ष की शेष अवधि के लिए ग्रहण करने के लिए प्राधिकृत किया था ;

और केन्द्रीय सरकार ने अपनी यह राय होने पर कि लोकहित में यह समीचीन है कि उक्त आदेश पूर्वोक्त पांच वर्ष की अवधि के अवसान के पश्चात् प्रभावी बना रहे, 31 मई, 1984 तक की जिसमें यह तारीख भी सम्मिलित है, और अवधि के लिए ऐसे प्रभावी बने रहने के लिए समय-समय पर निदेश जारी किए थे (देखिए भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय (औद्योगिक विकास विभाग) के आदेश सं० का० आ० 603 (अ), तारीख 1 अगस्त, 1980, का० आ० 620 (अ), तारीख 3 अगस्त, 1981, का० आ० 554 (अ), तारीख 4 अगस्त, 1982 और का० आ० 87 (अ), तारीख 4 फरवरी, 1983 और का० आ० 552 (अ)//18चक/आई डी आर ए/83 तारीख 4 अगस्त, 1983)

और, केन्द्रीय सरकार ने अपनी यह राय होने पर कि लोकहित में यह समीचीन है कि औद्योगिक उपक्रम का प्रबंध प्राधिकृत व्यक्ति के पास 31 दिसम्बर, 1984 तक की जिसमें यह तारीख भी सम्मिलित है, और अवधि के लिए बना रहे, उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1951 (1951 का 65) की धारा 18चक को उपधारा (2) के परस्तुत के अधीन उक्त आदेश को अनुज्ञा के लिए निवेदन करने हुए, कलकत्ता उच्च न्यायालय को एक आवेदन किया था और उक्त उच्च न्यायालय ने तारीख 22 मई, 1984 के अपने आदेश द्वारा उक्त अनुज्ञा दे दी है ;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1951 (1951 का 65) की धारा 18क की उपधारा (2) के परस्पर द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यह निदेश देती है कि उपर आदेश 31 दिसम्बर, 1984 तक की जिसमें यह तारीख भी सम्मिलित है, और अवधि के लिए, प्रभावी बना रहा।

[फा० सं० 2 (17)/80-सी०यू०एम०]

ए० पी० सरवान, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF INDUSTRY
(Department of Industrial Development)

ORDER

New Delhi, the 29th May, 1984

S.O. 408(E)/18FA/IDRA/84.—Whereas by the Order of the Government of India in the Ministry of Industry and Civil Supplies (Department of Industrial Development) No. S.O. 422(E), dated the 5th August, 1975 (hereinafter referred to as the said Order), the Central Government authorised the body of persons specified in that Order to take over management of the Industrial Undertaking known as the Messrs Engel India Machine and Tools Limited, Calcutta (hereinafter referred to as the said Industrial Undertaking) for a period of 5 years from the 5th August, 1975;

And whereas the Central Government in the Ministry of Industry (Department of Industrial Development) in its Order No. S.O. 292(E), dated the 16th May, 1979, authorised the Secretary, Closed and Sick Industries Department of the Government of West Bengal now called Secretary, Industrial Reconstruction Department, Government of West Bengal (hereinafter referred to as the authorised person) to take over the management of the said Industrial Undertaking from the aforesaid body of persons

for the remaining period of five years from the 5th August, 1975;

And whereas the Central Government being of opinion that it is expedient in the public interest that the said Order should continue to have effect after the expiry of the period of five years aforesaid, had issued directions from time to time, for such continuance for a further period upto and inclusive of the 31st May 1984 [vide orders of the Government of India in the Ministry of Industry (Department of Industrial Development) Nos. S.O. 603 (E) dated the 1st August, 1980; S.O. 620(E), dated the 3rd August, 1981; S.O. 554(E), dated the 4th August, 1982; S.O. 87(E), dated 4th February, 1983 and S.O. 552(E)/18FA/IDRA/83 dated 4th August, 1983].

And whereas the Central Government, being of the opinion that it is expedient in the public interest that the authorised person should continue to manage the said Industrial Undertaking for a further period upto and inclusive of 31st December, 1984 made an application to the Calcutta High Court praying for permission to that effect under the proviso to sub-section (2) of section 18FA of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951) and that the said High Court has, by its Order dated the 22nd May, 1984 granted the said permission;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-section (2) of section 18FA of Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), the Central Government hereby directs that the said Order shall continue to have effect for a further period upto and inclusive of 31st December, 1984.

[F. No. 2(17)/80-C.U.S.]

A. P. SARWAN, Jt. Secy.